अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

दुःखमुक्त रहना है तो दूसरों को दुःखयुक्त बनाने न हो प्रयासः महातपस्वी महाश्रमण

-पल्लीपुरम के सी.आर.पी.एफ. कैम्प स्थित केन्द्रीय विद्यालय पहुंचे अहिंसा यात्रा प्रणेता

-आरोह-अवरोह से युक्त मार्ग पर लगभग बारह किलोमीटर का किया विहार

-डिप्टी डीआईजी ने किए आचार्यश्री के दर्शन, प्राप्त किया मंगल आशीष

16.03.2019 पल्लीपुरम, तिरुवनंतपुरम (केरल): जन-जन का कल्याण करने, लोगों को सन्मार्ग पर लाने और लोगों के हृदय में मानवता को जागृत करने निकले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी, अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी केरल की धरती को पावन बनाते हुए अब केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में प्रवेश करने वाले हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने शनिवार को अटिंगल स्थित गवर्नमेंट कालेज परिसर से मंगल प्रस्थान किया। अपनी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए आचार्यश्री आगे बढ़े तो अटिंगल बाजार में अपने-अपने कार्यों को संपादित करने के लिए निकल रहे लोगों और पढ़ने के लिए जा रहे अनेकों विद्यार्थियों को आचार्यश्री के दर्शन करने का मंगल आशीष प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आज विहार मार्ग भी काफी आरोह-अवरोह युक्त था। आरोह-अवरोह युक्त राजमार्ग पर लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पल्लीपुरम स्थित सी.आर.पी.एफ. कैम्प में स्थित केन्द्रीय विद्यालय में पधारे। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री के. घोष सहित अनेक शिक्षक-शिक्षिकाओं आदि ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया।

विद्यालय परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञानी आदमी के ज्ञान का सार आचार होता है। ज्ञान का ही एक सार अहिंसा भी होता है। ज्ञानी आदमी किसी की हिंसा न करे, यह उस ज्ञान का महत्व हो जाता है। आदमी के मन में कभी हिंसा के भाव भी उभर सकते हैं तो कभी अहिंसा की चेतना भी जागृत हो जाती है। आदमी को अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

जहां हिंसा होती है, वहां दुःख भी हो सकता है। हिंसा दुःख का कारण होती है। हिंसा तो मानों दुःखों की मां होती है। जिसकी हिंसा की जाए उसे तो दुःख होता ही है, जो हिंसा करता है उसे भी दुःख प्राप्त हो सकता है। आदमी कभी गुस्से में तो कभी लोभ के कारण से हिंसा कर लेता है। आदमी को हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अपने जीवन को दुःखमुक्त बनाने के लिए हिंसा को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। अहिंसा भगवती होती है। अहिंसा सभी प्राणियों का कल्याण करने वाली होती है। जीना सभी के लिए अच्छा होता है। आदमी को अनावश्यक हिंसा करने से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अपने जीवन को दुःखमुक्त बनाना है तो उसे दूसरों को दुःखयुक्त बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आदमी को अहिंसा की शरण में जाने का प्रयास करना चाहिए। अहिंसा की शरण में जाने से ही शांति की प्रतिष्ठा की जा सकती है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् विद्यालय के प्रिंसिपल श्री के. घोष से अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति देते हुए आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यश्री ने विद्यालय में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के साथ-साथ संस्कारों की शिक्षा भी प्रदान करने की प्रेरणा देते हुए विद्यालय के लिए मंगल आशीष प्रदान की। मंगल प्रवचन के पश्चात् सी.आर.पी.एफ. कैम्प पल्लीपुरम के डिप्टी डी.आई.जी. श्री रोहिणी राज आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यश्री का उनके साथ कुछ क्षण वार्तालाप का क्रम रहा। आचार्यश्री ने उन्हें पावन पाथेय और मंगल मार्गदर्शन प्रदान किया।